भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 505

दिनांक 07/02/2025

मराठवाड़ा क्षेत्र में सीआरआईडीए मिशन कार्यालय की स्थापना

505. **डॉ. अजित माधवराव गोपछड़े :**

क्या **कृषि एवं किसान कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) मंत्रालय द्वारा, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (सीआरआईडीए) के लिए एक मिशन कार्यालय स्थापित करने के क्या उपाय किए गए हैं जिसका उद्देश्य संघर्षरत किसानों की सहायता करने के लिए बारानी कृषि पर आवश्यक और कार्यनैतिक अनुसंधान करना और मराठवाड़ा क्षेत्र में इसके परिणामों का उपयोग करना है; और

(ख) मराठवाड़ा क्षेत्र में संकटग्रस्त किसानों की सहायता पर केंद्रित कार्यक्रम शुरू करने के लिए भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान (आईजीएफआरआई) के संबंध में मंत्रालय द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : आईसीएआर-केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (सीआरआईडीए), महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में तीन अलग-अलग तरीकों से व्यापक रूप में और सीधे तौर पर काम कर रहा है जिसका समग्र उद्देश्य (बारानी कृषि पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपीडीए) तथा कृषि-मौसमविज्ञान पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपीएएम) केंद्रों के माध्यम से बारानी कृषि पर जरूरी और रणनीतिक अनुसंधान संचालित करना तथा इससे होने वाले परिणामों को मराठवाड़ा क्षेत्र में कार्यान्वित करना है, ताकि जलवायु अनुकूल कृषि में राष्ट्रीय नवाचारों-प्रौद्योगिकी प्रदर्शन घटक (एनआईसीआरए-टीडीसी) के माध्यम से संघर्षरत किसानों की सहायता की जा सके :

1. मराठवाड़ा क्षेत्र में स्थित एआईसीआरपीडीए परभणी केन्द्र, क्षेत्र-विशिष्ट फसलों और फसल प्रणलियों के मूल्यांकन और स्थापना; वर्षा जल प्रबंधन; पोषक तत्व प्रबंधन; ऊर्जा प्रबंधन; वैकल्पिक भूमि उपयोग प्रबंधन और वर्षा आधारित एकीकृत कृषि प्रणालियों (आरआईएफएस) के लिए कार्य कर रहा है।

2. मराठवाड़ा क्षेत्र में स्थित एआईसीआरपीएम परभणी केन्द्र, संसाधनों के लक्षणवर्णन निर्धारण करने के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। मराठवाड़ा क्षेत्र में मुख्य फसलों का फसल-मौसम-कीट-नाशीजीवों के बीच संबंध स्थापित करने का कार्य तथा क्षेत्र आधारित कृषि-मौसम संबंधी परामर्श जारी कर रहा है।

3. मराठवाड़ा क्षेत्र में स्थित कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) के माध्यम से एनआईसीआरए-टीडीसी के जालना, लातूर और उस्मानाबाद केंद्र चार माड्यूलों अर्थात प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, फसल और फसलचक्र प्रणाली, पशुधन, ग्रामीण स्तर के संस्थानों, क्षमता निर्माण इत्यादि के माध्यम से इस क्षेत्र में जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों को उन्नत (अपस्केलिंग) कर रहें हैं। इस क्षेत्र में जिन मुख्य प्रौद्योगिकियों को उन्नत किया जा रहा है उनमें कम अवधि और सूखे से बचने वाली सोयाबीन की किस्म (MAUS-158); कम अवधि की तुअर किस्म (BDN-711) जो बार-बार सूखा पड़ने वाले क्षेत्र के लिए है; नमी घटने वाली स्थितियों के लिए कुसुम (PBNS-12) की तनाव सहिष्णु किस्म; तनाव सहिष्णु रबी सोरगम किस्म (परभनी मोती) शामिल है; तथा महाराष्ट्र के सूखा पड़ने वाले क्षेत्रों में उत्पादन की निरंतरता को बनाए रखने तथा जोखिम कम करने के लिए अंतरफसल प्रणालियां उन्नत की गई हैं ताकि अक्सर सुखाग्रस्त क्षेत्रों में जोखिम कम किया जा सके जिससे संघर्षरत किसानों की सहायता की जा सके।

   महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में एक मिशन कार्यालय (ऑफिस) स्थापित करने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

(ख) : आईसीएआर-आईजीएफआरआई ने संकट में फंसे किसानों की सहायता करने के उद्देश्य से मराठवाड़ा क्षेत्र को शामिल करते हुए महाराष्ट्र के लिए चारा संसाधन विकास योजना विकसित की है। इस योजना से महाराष्ट्र में सूखे चारे की 31.3% की कमी और हरे चारे की 59.4% की कमी के अंतर को कम करने में मदद मिली है। चारे की उपलब्धता को और अधिक बढ़ाने के लिए, भारतीय रेंजलैंड और चारागाह संरक्षण, पुनरूद्धार और भरण-पोषण हेतु एक नीति बनाई गई है जिसमें महाराष्ट्र के चारागाहों को फिर से जीवंत करने में मदद मिली है।

इसके अतिरिक्त, आईसीएआर से समर्थित अखिल भारतीय समन्वित चारा फसल और उपयोग अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपी-एफसीएंडयू) के दो केंद्र पहले से ही पुणे और राहूरी में कार्यरत हैं, ताकि किसानों के खेतों पर रबी और खरीफ फसल मौसम में चारा फसलों पर मराठवाड़ा क्षेत्र सहित पूरे महराष्ट्र के लिए प्रौद्योगिकियों को सृजित और प्रसारित किया जा सके।

पिछले पांच वर्षों के दौरान, महाराष्ट्र के विभिन्न भागों में खेती करने के लिए एआईसीआरपी-एफसीएंडयू तथा आईसीएआर-आईजीएफआरआई द्वारा विभिन्न चारा फसलों की 50 से अधिक किस्मों का विकास किया गया है और इनकी खेती करने की अनुशंसा की गई है।

****